

II-327

धर्मरत्न वस्त्राचार्य सूर्य श्री महाविहार

सावन यमूयय विवृण को ध्याय कृण वे स्यामा ॥
५ ॥ उदय सूर्य कवन नयन अगनि न ध्याय कृ
रिना दिना श्रियै वि धि सावन अने गरुयै के गक्रा
मिसय युवा किना ॥ ६ ॥ विवि वि धि कृ स अने
गरु गना कृय थ कृ गनि विवा सिन श्रु नाने य वि न

माक्रु दर्मि न म कि य द य व दाय कं ॥ ७ ॥ वि स
व स पु व स न या ल व दू वा सा गा मि व सि न य कृ ग श्र द
मि मि थि के कृ वा व स कृ कृ य द द र्ज न मंगला ॥
८ ॥ वि डा वा र्थ य कृ वा र्क वे वि न न य स मि सा ल
का श्र गा न य व वि न ग र्ग वा श्र कृ ग वि वि धि र कि

१। अमृगसूत्रं ब्रह्माय नमः । यथा ह्येवमुक्तम्
कसं २ मा क्रुवादि गमानां स्यादिति वल सं वल आ ॥

१ ॥ अथि नमस्तुभ्यं संप्रदायं विष्णुसंघदत्तं
यत्कं शुद्धिगणसूक्तं सुसंकाशं देहानामिदं वंगव
हानं ॥ ३ ॥ न उदिष्यति विष्णुसंघदत्तं याग
सूक्तं क्षयिनाश्मयवयाहानसंघेर्न नमामि शु
भमिनाशयं ॥ ४ ॥ सयकद्विषयज्जालं रुनाः

हविगवर्षु विना किं १७ रुतमय्यथा ज्ञा मावर्षि
विना मा मि कृतवा हा ॥ ७ ॥ ॥ ॐ चूक मूः
गिका मद्रु मिद मरु य मिया विना २ सिद्व
हान धान मू मि न मा मि श्री वे लावन ॥ ७
॥ गगल विचू माव वदना वक्ता श्री नया लिना

१ गी गगं १० गक सु समा ना न मा मि श्री धर्म धातु म
वर्ष ॥ १ ॥ ॥ ॐ मि धम धातु गी म मा य ॥ १००
१० न मा वृद्धाय ॥ मा धि गत विरु य श्री वे लावन दि
न यल १ सिद्व मा स न सिद्व म्भ म वल्ल ॥ १० ॥ न मा
मुन मुयं वि न स व न ॥ १ ॥ ॥ यूर वि ग विरु

यथा जक्रास किनठर २ गडमास नलिगलव
 ॥ १ ॥ दोकैल किग विडया बल सैरव कि
 नवर १ गडमास नलिगलव ॥ ३ ॥
 यदि चिस किग विडया ॥ जमि ना र किन वल २
 मय वस नलिगेन काय ॥ ४ ॥ उलवदि
 मा

गवि डायथा जमाय सिद्धि किन डाल २ गडमास न
 लिगलव ॥ ५ ॥ सोवद नवक मकना
 गडमास २ वरु विडि डय हावयु वनाह
 नं ॥ ६ ॥ नियु किन गीन समाक ॥ ७ ॥
 २ डन मासं नं थय ॥ मंडस्था साक ना थ किन वव

मंडा ना

मकुटाङ्गवत्तयावडासलसेविधावडाया निमू
वत्रयकवावाहवा रुडयाल ॥ वद्वैवेसारनार्यः
मिरुवननमिगुकेल्लोसिह्यवामुहामवाथसिः
द्विधिमयसमयसमंगलंकीधिसल ॥ १ ॥ वद्वै
हंकाववजायमुपगिदमकावडायचुहुसायि

गोहावाहवडाालियुगसमथनाडकिवाडासहस
॥ जक्राल्यवतकपुयुमिदिनमववागंशरुमिडा
मालिसुगा ॥ २ ॥ संघंलीलाकवंधुगुननि
वयावाधिवरुसुविंलरुदोयोवडुसिद्धविदि
गकविमवाहवका निवगलु ॥ वद्वैसावद्वैवाका

विदिम किन गुन सर्व सत्त्वा नु कंटा मुक्ता ॥ ३
यद्वा यद्वा यद्वा वागद नृक रूक गि कान न सं रा व स र
मा वि वि मा न मा न मा क व रु य न रा यि ग व शु गि व कु
॥ माय वि मा न कि न क यि ग वि यू ग स य सु वा ल स न
व मुक्ता ॥ ४ ॥ गा ध वि क र वि व रू क ग क न

क व र व ऊ या सा क र म ग म वा वि व ऊ रु सा ज सी यु
र स ध रा ध म ध म वि व ॥ क य वि क न स स ध
नि कि न क वा र व ऊ या म ध वि व मुक्ता ॥ ५ ॥
वे वा सा वा सु गी ना यि थि न दि न वे न सा व थि ध य व
जा वे न वि ग ध व ऊ पु र सि व व द ना ल गी मि ज स य

नावा ॥ लकोवृद्धस्य कोष्ठिसुखवदनयिनासात्राथिधू
यवकोमुखा ॥ ६ ॥ वैष्णवाधर्मवकायाथिना
जिनवस्यपर्यवगधेकुटुम्भारखोलुविनिवक्तिमिव
रविदिग्गकाकनकोष्ठिरु ॥ धीमद्वेवावर्गवसूत्र
गनसमिगंसाद्वर्गसूत्रवकुमुखा ॥ ७ ॥ अगद

वाययमधुक्रमविनिदिगलावनामधुसूर्यकनादि
युद्धकुरुमनिववनैवकायभूनिधनायात्रिदार्थः
सूत्रनतिगंसास्यनास्यविस्यमुखा ॥ ८ ॥ अगि
मंगवासावसागंसाफ ॥ ९ ॥ सुदमगर्ज ॥ १०
उनसा ॥ आरिनदवायसदुमकोटियुवाकमंदसय

विस्मा नैरु नका व धुंग ज धव यव नन दि लाय
 योत्र जस्त य दा ना त्वं द सु न मा दा वि उ वि य द न
 दे व स गि द यो नि म हा पु य न म स स द स दि ना रु
 या मि ना थं उ जे रू यि सा य यि र यो द का या न मु
 ने ॥ ॐ ॥ न मा व धा य वे द ग्गा य न स
 गो र व न य म ग न स वे दे ध र वे न नै



(Faint handwritten Devanagari script)

धर्मरत्न वज्रपात्राय सुस्त श्री महाविहार

II- 327

यादृक्कालो व हस्तः कयूवदात्मनिकं लुल्लयुगं च ॥
नवस्तुवनं रवनवनं सुकमात्रया व कामं हस्तं वनमसि
विगमं शिवायं ॥ १ ॥ आमागक्यविवलस्य विवले
मानं विह्वलयं च कप्रसंगगामकस्यास्ते विह्वल
नवनाथगुप्तानवगसुक्कायं धननयाय नमानुः

निलं ॥ ३ ॥ गस्त्रिधर्मनयमागवस्य दिगं
ज्ञानादिधिनिविलसलकणाधिकारि ॥ यज्ञो निधा
नयुक्तसागवज्युन्यायं मंशुष्टाय दिनसुगं भागन
नमानि ॥ ४ ॥ विविदिगसुकवननोयविनोरवस
लुकुनडुनडयकविनिधिरवस्तुनि ॥ मस्तुमस्तु नवि

कावाव्यं च विप्रश्चिरवन जनकं कोया दुर्मं हृद्याय
॥ ७ ॥ मम भवति मम भवति मम भवति मम भवति
सुप्रियं मम गिरां गय कृतिरं कसावं शय थदत्र वयम
कं यन्नयनाया क्रमं कतिदिदं नद कसं हृद्याय नम
ति ॥ ७ ॥ वावद्वं विप्रश्चिरवन जनकं कोया दुर्मं हृद्याय

काजा मय ना कयदे मरु धाय सदा ॥ यागवा म कय
यस्य न मरु नरु निरु माना मरु धाय नम
ति हं ॥ ७ ॥ मम भवति मम भवति मम भवति मम भवति
रति न ज्ञान था कुसूर्याय न हृद्याय नम ॥
ज्ञाना कुवय रा रं पुनि अनं नम था सा नि धियं

मन्त्रध्यायंरुक्मयुलसामिदं॥ ६ ॥समिगसः
कनकलसलकषा निहयिनसिनयियसमनारवद्विड
निस्यरवकुनकनरुडानस्यरवशायसामरवधायनो
धिकनगुनकारवयानुसामरुध्यायं॥ ७ ॥०००
रुडनसामरुनाथयारवका निहयमनूडास्ययकिनाग

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विप्रसविं ह्यवृद्धि वाचस्यति दि विरुवंसु गदगिद
सं॥ क्लान्त्यव विरुवंसु सवराच वनं॥ वागी ३५॥ ३
प्रतादिगित्या विरुवंसु नय धु क्लय विरु विरि विरि
गुन इति सा नानियं सर्व क्लय क्लय धवा क्लदि वृद्धय
कं॥ वागी ३५॥ ४ ॥ अथ विविध विविध विविध

धैर्यवृद्धि धाना विविध विविध विविध विविध विविध
विद्याय विविध विविध विविध विविध विविध विविध
५ ॥ विविध विविध विविध विविध विविध विविध
मनिसंकेत मगद धनं॥ विविध विविध विविध विविध
नृदं॥ वागी ३५॥ ५ ॥ अथ विविध विविध विविध विविध

यु

धुसुगंधककात्रिथिसमसाहितं॥ ४ ॥ अकः
 नयुमानसहसुदलवत्तमयवगिवादिनं २ दिनन्यका
 अत्रविथिगुनानंस्वयंस्वतन्निवाहितं॥ ५ ॥ ॥ ४
 यवयुवयुवकवयुवगसन्विभल्लकारनसुधनं २ यगुन
 मयनिनिवयिगवकयुद्धालसंकुविनं॥ ६ ॥ ना

नाकसमयधुसारिभूनिनववसुसारिभू॥ १ ॥
यकनागैकमयकनागामनाह्वं॥ २ ॥
अथयककिन्नरगजमनिरिकुवागिभं २युधरुमा
साकवादिभयिर्विधुयहावधिविभं॥ ३ ॥
अथमगीतवह्विभसंयकनागाम २हादभन्न

यथा नार्थं धर्मं धर्मादुवागीश्वरं ॥ ७ ॥ सां गिं का
 न सा धना थं यं यं विनिष्ठा सि नि २ म हा मा वि नि ज्ञ
 ना धर्मा धर्मा धर्मा धर्मा धर्मा ॥ १० ॥ ज्ञाना
 नि र्ममं गं मलि लि गं गं कं कं २ वा र्ग वि व व क
 रु नि धं र्म न ग ध र्म वि वि क मं ॥ ११ ॥ यं यं

अथ वक्तिर्यह न हासमनूरु वंश्वा गम नि विजिन वा धीन
 विनाम न नीच दिहाजिनै ॥ १२ ॥ कदा धम धु नि कदा कप वा हं क
 धा वक्ति नदि संग मे २ वूं चारु ल अरु स्वा वा ना अरु नाम पकि
 रि कं ॥ अरु व न प्रद पृथ वा गी ध ज गु फ ले न नि २ वृ द न २ रु
 कि न न क न अरि हरु ल दं भा क सखा च कि पा प्रव ॥ १४ ॥
 धूमि धी वृ च गी कं धर्म धा धु २ स मा फ १ ॥ १५ ॥ ॥